मूल्य – 5 रु.

तारांशु

मासिक

Tara

नवम्बर – दिसम्बर 2024
वर्ष 10, अंक 10, पृ.सं. 20

आनन्द वृद्धाश्रम में फुर्सत के पल...

''आनन्द वृद्धाश्रमों हेतु भविष्य निधि योजना''

तारा संस्थान के आनन्द वृद्धाश्रमों में रहने वाले बुजुर्गों की निरंतर भोजन सेवा, चिकित्सा हेतु भविष्य निधि (Corpus Fund) में सहयोग देवें।

वृद्धजन सहयोगी ''शांति''
रु. 1,00,000/-

वृद्धजन सहयोगी ''शक्ति''
रु. 51,000/-

वृद्धजन सहयोगी ''आस्था''
रु. 21,000/-

आपके सहयोग की ब्याज राशि से वृद्धाश्रम के कार्य चलायमान रहेंगे।

आनन्द वृद्धाश्रम सेवा (प्रतिबुजुर्ग)
01 वर्ष - 60000 रु., 06 माह - 30000 रु., 01 माह - 5000 रु.

वृद्धाश्रम बुजुर्गों हेतु भोजन
4000 रु. (एक समय / प्रतियूनिट)

काशी में कराएँ गरीबों को भोजन

संस्थान द्वारा गरीबों में भोजन वितरण करते हुए

कहते हैं कि भूखे को भोजन करवाकर न सिर्फ मन वरन् अंतरात्मा भी संतृप्त होती है। आप भी **रु. 2100/- दान देकर** 50 निर्धन लोगों की क्षुधा शांत कर काशी विश्वनाथ की धरा वाराणसी में पुण्य लाभ कमा सकते हैं।

''तारा संस्थान, उदयपुर'' राजस्थान रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र क्रमांक : 31/उदयपुर/2009-10 दिनांक 25 जून, 2009 द्वारा पंजीकृत है।

आशीर्वाद :
डॉ. कैलाश 'मानव'
संस्थापक एवं प्रबन्ध न्यासी,
नारायण सेवा संस्थान (ट्रस्ट), उदयपुर

आभार :
श्रीमती पुष्पा - श्री एन.पी. भार्गव
मुख्य संरक्षक, तारा संस्थान
उ।ोगपति एवं समाजसेवी, दिल्ली

डॉ. जे.पी. शर्मा
परम विशिष्ट संरक्षक, तारा संस्थान
शिक्षाविद् व समाजसेवी, दिल्ली

संरक्षक मण्डल :

श्रीमती सुषमा - श्री सत्यभूषण जैन
दिल्ली

श्रीमती सुमन - श्री अनिल गुप्ता (ISKCON)
दिल्ली

श्रीमती शमा - श्री रमेश सचदेवा
दिल्ली

श्रीमती प्रेम निझावन
दिल्ली

श्रीमती लता - श्री लक्ष्मण दास भाटिया
मुम्बई

श्री ओ.सी. जैन
रतलाम (म.प्र.)

श्री एस.एन. गोयल
दिल्ली

श्री प्रेम सागर गुप्ता
मुम्बई

श्रीमती राजरानी - (स्व.) श्री राजेन्द्र कुमार जैन
दिल्ली

प्रकाशक एवं सम्पादक :
कल्पना गोयल

दिग्दर्शक :
दीपेश मित्तल

कार्यकारी सम्पादक :
बरखा सेन

ले-आउट व ग्राफिक डिजाइनर :
गौरव अग्रवाल

तारांशु - वर्ष 10, अंक - 9, सितम्बर - अक्टूबर 2024

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
योजनाएँ	02
अनुक्रमणिका	03
एक माँ की ममता	04
थकी आँखों के आँसू	05
वृद्धाश्रम नहीं अब ये हमारा ''घर'' है	06-07
एक महान दानी - ''महर्षि दधीचि''	08
''मस्ती की पाठशाला''	09
लौटी आँखों की रोशनी	10
एक पहल (गौरी योजना और तृप्ति योजना)	11
न्यूज़ इन ब्रीफ	12-14
नेत्रालय मासिक अपडेट्स / पुण्यतिथि भोजन सेवा योजना / हार्दिक श्रद्धांजलि	15
अभिनन्दन	16-18
संपर्क सूत्र - तारा संस्थान	19

आशीर्वाद - डॉ. कैलाश 'मानव' संस्थापक - नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

श्रीमती कल्पना गोयल (दाएं) अपने पूज्य माता पिता डॉ. कैलाश ''मानव'' तथा श्रीमती कमला देवी अग्रवाल की सन्निधि में।

'तारांशु' – स्वत्वाधिकारी, श्रीमती कल्पना गोयल द्वारा 240–ए, हिरण मगरी, सेक्टर – 6, उदयपुर (राज.) 313002 से प्रकाशित तथा मुद्रक श्री सत्यप्रकाश कुमार शर्मा द्वारा सागर ऑफसेट प्रिन्टर, इण्डिया प्रा. लि. प्लॉट नं. 518, इकोटेच – III, उ।ोग केन्द्र एक्टेंशन – II, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश) में मुद्रित, सम्पादक – श्रीमती कल्पना गोयल

"अमीरा बाई के .... 5 सेब"

"एक माँ की ममता"

तारा संस्थान के "कृष्णा शर्मा आनंद वृद्धाश्रम" में रोज़ दोपहर का भोजन लेती हूँ। इससे दो काम होते है – पहला तो यह की खाना सही बन रहा है या नहीं इसका पता चल जाता है, दूसरा यह की वृद्धाश्रम में रोज़ जाना से वहा की व्यवस्थओं पर एक निगाह बनी रहे।

हमारे वृद्धाश्रम में एक महिला है जिनका नाम अमीरा बाई है। पूरी कमर झुकी हुई, चेहरा झुर्रियों से भरा हुआ लेकिन बहुत जिंदादिल। लगभग रोज़ उनसे मिलती हु और पूछती हूँ कैसे हो? तो वह चमकती आँखों से बुलंद आवाज़ में जवाब देती है ठीक हाँ।

जब से यहाँ आयी है उन्होंने नाही कभी कोई शिकायत की और नाही अपना कोई दुःख बताया। रोज़ आश्रम जाना और उनसे मिलना ज़िन्दगी का एक हिस्सा सा बन गया है।

जैसा की आपको पहले भी बताया था, की अमीरा बाई को उन्ही की बेटी किराये के मकान में अकेला छोड़कर चली गयी थी, और उनके कोई रिश्तेदार उन्हें तारा संस्थान के आनन्द वृद्धाश्रम में छोड़कर चले गए थे। उन्हें आज भी लगता है की वह कुछ समय के लिए यहा रहेंगी और उनकी बेटी नाजिया एक दिन आकर उन्हें यह से अपने साथ अपने घर ले जाएगी। लेकिन यह हम सब जानते है की नाजिया अब कभी नहीं आएगी।

अभी कुछ दिन पहले मैं दोपहर का खाना खाकर आश्रम से निकल ही रही थी तभी सीढ़ियों पर बड़ी मुश्क़िल से ऊपर चढ़ती हुई अमीरा बाई मिली, मैंने देखा की उनके हाथ में एक थैली थी जिसमे 4–5 सेब थे। मैंने उनसे पूछा की नीचे कहाँ गए थे तो थोड़ा गुस्सा करते हुए बोली ‽ वो दिनेश कहाँ चला गया मिल ही नहीं रहा है? दिनेश जो की हमारे यहा एक सफाई कर्मचारी है, वह उनकी खूब अच्छे से देखभाल करता है। जिसके चलते अमीरा बाई और दिनेश के बीच काफी अपनत्व हो गया है।

मैंने पूछा दिनेश से क्या काम है तो अमीरा बायीं बोली ये कुछ सेब है जो आमना के यहाँ भिजवाने है। उनकी बात सुनकर मुझे क्या एहसास हुआ यह बताना मुश्किल है। सच ही कहा है किसी ने माँ तो माँ होती है, अमीरा बायीं आज भी अपनी उस बेटी और उसके बच्चों के लिए इतना सोचती है जो उन्हें अकेला मरने के लिए छोड़कर चले गए।

एक माँ के लिए उनकी औलाद से बढ़कर कुछ नहीं होता फिर भले ही बच्चे अच्छे हो या बुरे, उनकी ममता दुनिया के सारे प्यार से ऊपर है और आनन्द वृद्धाश्रम में इसका प्रत्यक्ष प्रमाण कई बार देख लिया है।

– कल्पना गोयल

लबों पे उसके कभी बदुआ नहीं होती बस एक माँ है जो कभी खफा नहीं होती।

"थकी आँखों के आँसू"

जैसा की आप सब जानते है पिछले कई वर्षो से तारा संस्थान अपने वृद्धाश्रमों के माध्यम से उन बुजुर्गो का सहारा बनी हुई है जिन्हे नाजाने क्यों अपने ही अपना नहीं समझते?

कुछ समय पहले की बात है तारा संस्थान के आनन्द वृद्धाश्रम में एक सज्जन आए जिन्होंने अपना नाम अशोक गुप्ता बताया, उम्र लगभग 65 –70 वर्ष थी।

उन्होंने बताया था की वे हिन्दुस्तान जिंक में फोरमेन के पद से रिटायर हुए थे, पी.एफ. का जो पैसा मिला वो दो बेटों की पढ़ाई पर खर्च कर दिया था और थोड़ा बचा हुआ उनकी पत्नी के इलाज़ पर खर्च दिए जो की हृदय रोग की वजह से चल बसी।

उनका एक बेटा उदयपुर में ही रहता था और दूसरा बेटा अजमेर में। वे अपने अजमेर वाले बेटे के साथ रहते थे, बहु नहीं चाहती थी की अशोक जी उनके साथ रहे। इस बात को लेकर वह रोज़ अशोक जी के बेटे से लड़ती और कहती की या तो तुम्हारे पिता इस घर में रहेंगे या मैं। रोजाना के झगड़ो से तंग आकर अशोक जी ने बेटे के घर को छोड़ने का फैसला कर लिया और पुष्कर में किसी वृद्धाश्रम में रहने चले गए फिर भटकते हुए तारा संस्थान के आनन्द वृद्धाश्रम में पहुँच गए।

कुछ माह अच्छे से रहने के बाद एक दिन पता चला की उनकी तबियत ख़राब है तब उन्हें पास ही के एक अस्पताल में दिखाया जहाँ डॉक्टर ने बताया की उनमे खून की काफी कमी है हिमोग्लोबिन लगभग 5 ही था। डॉक्टर द्वारा लिखी हुई दवाईयों से भी कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। ऐसा लगता था जैसे मनो उन्हें एक अंदेशा सा हो गया था की अब उनके पास ज्यादा समय नहीं है। और यही सोचकर उन्होंने अपने बेटों से बात करने के लिए आश्रम से फ़ोन किया तो बेटों ने आवाज़ सुनते ही फ़ोन काटकर स्विच ऑफ कर दिया।

बेटों का अशोक जी के प्रति यह व्यवहार देखकर उनकी आँखे भर आई और उनकी तबियत दिन पर दिन बिगड़ती चली गयी। एक दिन जब तबियत ज्यादा ख़राब हुई तो आश्रम के कर्मचारी उन्हें अच्छे हॉस्पिटल लेकर गए और भर्ती करवा कर उनके बेटों को फ़ोन पर यह सुचना देते हुए कहा की उनके पिता जी की तबियत बहुत ख़राब है और कभी भी कुछ भी हो सकता है, इलाज का खर्च तो हम उठा रहे है आप लोग बस आकर मिल लीजिए तो बेटों ने यह कह कर फ़ोन रख दिया की हम व्यस्त है ओर इतनी दूर से नहीं आ सकते।

अगले दिन शाम को हॉस्पिटल से फ़ोन आया की अशोक जी नहीं रहे। जब दाह संस्कार के लिए अशोक जी के अजमेर वाले बेटे को फ़ोन किया और पूछा की आप लोग आ रहे है या हम ही कर दे तो उसने आधे घंटे में छोटे वाले भाई को कुछ 5–6 रिश्तेदारों के साथ आनन्द आश्रम में भिजवाया और खुद भी अजमेर से रवाना हो गया। अगले दिन दाह संस्कार के वक्त किसी ने हमे बताया की बेटों ने बाल अर्पण किये।

– दीपेश मित्तल

मेरा एक सवाल है – क्यों जीते जी अपने ही अपनों की कदर नहीं करते ?

''वृद्धाश्रम'' नहीं अब ये हमारा ''घर'' है

धर्म सिंह : दुख एक ऐसी अनुभूति है, जिसमें इंसान अगर डूब जाये तो उससे उभर पाना बेहद मुश्किल है। इसका जीता जागता उदाहरण है देहरादून के रहने वाले धर्म जी जो 22 सालो से अपने अकेलेपन के दुख से लड़ रहे है। लकड़ी काटने का काम करने वाले धर्म जी अपने अकेलेपन की कहानी सुनाते हुए बताते है की वह अपने 10 वर्षीय इकलौते बेटे और पत्नी के साथ देहरादून में रहते थे। एक बार गर्मियों की छुटियों में बेटे ने नानी के घर कोलकाता जाने की ज़िद की तो उसे रोक ना सके और बेटे व पत्नी को लेकर कोलकाता के लिए रवाना हो गए। अगले दिन जब बच्चे ने घूमने की ज़िद की, तो उसे लेकर एक नदी किनारे चले गए जहाँ खेलते वक़्त उसकी पानी में डूबने से मृत्यु हो गई, बेटे के इतनी कम उम्र में चले जाने से पत्नी गहरे सदमे में आ गई और करीब 2003 में वे भी दुनिया से चल बसी अब धर्म जी का कोई नहीं था जो की उनका साथ दे और देखभाल करे। इसी वजह से धीरे-धीरे कई तरह की बिमारियों से घिर गए जिसमे से एक थी मोतियाबिन। एक दिन आँखो का इलाज करवाने हेतु सोशल मीडिया पर किसी अच्छे अस्पताल की तलाश करते समय उन्हें उदयपुर के तारा नेत्रालय का पता चला तब तय किया की अब वह आँखो का इलाज तारा नेत्रालय में ही करवाएंगे। ऑपरेशन करवाने के बाद नेत्रालय के एक कर्मचारी द्वारा उन्हें पता चला की तारा संस्थान सर्व सुविधाओं युक्त बुजुर्गो के लिए वृद्धाश्रम भी संचालित करता है। तो वह ऑपरेशन करवाने के बाद वृद्धाश्रम में की जा रही बुजुर्गो की सेवाओ को देखने पहुँचे और वहाँ उन्हें सभी से पहली ही मुलाक़ात में खूब अपनेपन का एहसास हुआ।इतना अपनापन पाकर तय कर लिया की दुबारा घर लौटकर अकेले रहने से तो अच्छा है की यही रह जाए,ऐसा घर जैसा खाना, रहना, समय-समय पर डॉक्टरो द्वारा जाँच तथा ऐसा खुशहाल माहौल और काई नहीं मिल सकता। तारा संस्थान के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुए धर्म जी कहते है की अपनों को तो वे खो चुके है परन्तु इन पराये लोगो से उन्हें जितना अपनापन मिला है वो रब की दी गयी किसी मेहर से काम नहीं है।

मनोहारी बाई : मनोहारी जी राजसमंद की निवासी है, वह बताती है की करीब डेढ़ साल पहले एक लम्बी बीमारी के चलते उनके पति किशन लाल जी का स्वर्गवास हो गया था। तीन बेटों की माँ होते हुए भी हर चीज़ के लिए सोचना पड़ता था। बच्चे अब शादीशुदा हो गए है तो बेटों के साथ-साथ बहुओं की भी कड़वी बातें सुननी पड़ती थी। हालात ऐसे बन गए थे की घर वालो ने समय पर खाना देना ही छोड़ दिया था तो दवाइयों की फ़िक्र कौन करे। इस उम्र में हर छोटी से छोटी जरुरत की चीज़ो के लिए तरसती मनोहारी जी अपने स्वर्गवासी पति को याद करके रोज़ रोती रहती। एक दिन जब मनोहारी जी का खाने की बात को लेकर बड़ी बहु से झगड़ा हो गया था, तो वह घर की चौखट पर परेशान बैठी थी, तब राधा जी जो की उनके पड़ोस में अपने पति व सास के साथ रहती थी। वह मनोहरी जी के पास आई और उनसे उनकी परेशानियों की वजह जानने लगी। प्यार भरी राधा जी की बातें सुनकर मनोहरी जी ने रोते हुए उनके प्रति अपने घर वालो के बर्ताव के बारे में सबकुछ बता दिया। राधा जी ने उनकी पूरी बात सुनकर उन्हें एक बार तारा संस्थान द्वारा संचालित वृद्धाश्रम में जाकर सारी व्यवस्थाए देखकर आने की सलाह दी। अगले ही दिन मनोहारी जी उदयपुर के आश्रम में पहुँची और वहाँ के सभी आवासियों से मिली। आवासियो द्वारा बताई गई बातों से वह बहुत संतुष्ट हुई और तय कर गयी की कल ही घर से अपना जरुरी सामान लेकर आश्रम में रहने के लिए आ जाएगी। जैसा सोचा था वैसा ही करते हुए मनहोरी जी अगले ही दिन राधा जी को खूब सारा आशीर्वाद देकर आश्रम में रहने के लिए आ गयी। तारा संस्थान का धन्यवाद करते हुए वह कहती है की इस उम्र में दो रोटीयो के लिए अपने ही बच्चो के आगे हाथ फैलाने से तो अच्छा हुआ की वह समय रहते आश्रम आ गई, अब यह आश्रम ही उनका घर है।

निस्वार्थ सेवा ही सच्ची सेवा है।

त्रिशला जैन : जीवन की कैसी विडंबना है, की अच्छे से सुख सुविधाओ के साथ जीने के लिए पैसो की जरुरत पड़ती है,और इस जरुरत को पूरा करने के लिए बच्चे अपने बूढ़े माता–पिता को अकेला छोड़कर कमाने के लिए दूसरे शहर चले जाते है। वही बच्चो के लौटकर आने की आस में माँ–बाप की आँखे इंतज़ार में पथरा जाती है।यहां हम बात कर रहे है, जयपुर की निवासी त्रिशला जी की, जिनके पति दो साल पहले ही इनका साथ छोड़कर दुनिया से विदा हो गए। तब इन्होने सोचा की अब उम्र बची ही कितनी है, दो बेटे है इनके सहारे गुजर जाएगी। पर उन्हें कहाँ पता था की कमाने की जतो जहेत में दोनों बच्चे उन्हें जयपुर में अकेला छोड़कर दूसरे शहर चले जाएंगे। त्रिशला जी रोज़–रोज़ अपने बेटों को फ़ोन करके उनसे आग्रह करती की या तो लौट आये, या उन्हें दोनों में से कोई भी अपने साथ ले जाए परन्तु रोज़ बेटे यह बात कहकर टाल देते थे की हम तो दिनभर घर पर रहते नहीं है फिर आपका ध्यान कौन रखेगा, आप शुरू से जयपुर ही रही हो वहाँ आस पास जान पहचान के लोग है, पड़ोसी है, तथा रिश्तेदार भी तो है। परन्तु आज की दुनिया में जब खुदके बेटो के पास ही माँ के लिए समय नहीं है तो किसी और को क्या पड़ी है जो उनकी देख–रेख करे।त्रिशला जी अकेली रहते–रहते और स्वर्गीय पति की याद में रोते–रोते खूब बीमार रहने लगी। उनकी यह हालत देखकर, जयपुर में ही रह रहे एक रिश्तेदार ने उन्हें तारा संस्थान द्वारा संचालित सभी सुख सुविधाओ युक्त वृद्धाश्रम के बारे में बताया और कहा की यहाँ अकेले रहकर बीमार रहने से तो अच्छा है कि वह आश्रम चली जाये और अपने हम उम्र लोगो के साथ अपना और उनका दुःख दर्द बाटें। करीब एक महीने पहले त्रिशला जी ने आश्रम में आकर रहने का फैसला किया और रहने के लिए चली आई। तारा संस्थान का धन्यवाद देते हुए वह कहती है की अगर वह उस रिश्तेदार की बात न मानती तो उनका अकेलापन उन्हें कब का खा जाता।

किरण पांडे–श्रीराम पांडे : वो कहते है ना दो माता–पिता मिलकर दस बच्चो को पाल सकते है, मगर दस बच्चे मिलकर दो बूढ़े माँ–बाप की सेवा नहीं कर सकते। कुछ ऐसी ही कहानी है पुष्कर (अजमेर) निवासी श्रीमती किरण पांडे और श्री श्रीराम पांडे जी की जो की तीन बेटों और एक बेटी के माता–पिता है। पिछले 22 वर्षो से यह दोनों होटल का व्यवसाय कर रहे थे। कभी एक दिन के लिए भी पुष्कर से बाहर नहीं गए थे, तो अब वह दोनों चाहते थे की जितने हो सके उतने तीर्थ स्थानों के दर्शन करले और अपना बचा हुआ जीवन भगवान की सेवा में अर्पित कर दे। परन्तु उनकी इस इच्छा से उनके बच्चे काफी नाराज़ थे और इस बात को लेकर रोज रोज झगड़े होने लगे। हद तो तब हो गयी जब इनके तीनो बेटों में से एक ने इनके आगे शर्त रखते हुए यह कह दिया की अगर वह ऐसा करते है तो जहाँ जा रहे है वही कही किसी मंदिर में अपने रहने का इंतज़ाम करले, तो बेटे द्वारा की गयी ऐसी कड़वी बात सुनकर किरण जी गहरे सदमे में चली गई। पत्नी की ये हालत देखकर और झगड़ो से तंग आकर श्री श्रीराम ने सोशल मीडिया से तारा संस्थान के बारे में जानकारी हासिल की और अपना सारा व्यवसाय बच्चो को सौपकर, संस्थान में अपनी पत्नी के साथ आकर यही रहने का निर्णय लिया। तारा संस्थान द्वारा संचालित वृद्धाश्रम के शांति पूर्वक और अच्छे माहौल की मदद से अब उनकी पत्नी की तबियत में काफी सुधार है। श्री श्रीराम जी अपनी पत्नी के चेहरे पर लौटती हसी और खुशी को देखकर तारा संस्थान का तहे दिल से आभार व्यक्त करते है।

आनन्द वृद्धाश्रम सेवा (प्रतिबुजुर्ग)
01 वर्ष - 60000 रु., 06 माह - 30000 रु., 01 माह - 5000 रु.

वृद्धाश्रम बुजुर्गों हेतु भोजन
4000 रु. (एक समय / प्रतियूनिट)

जहाँ अपनापन ही ना हो, वहाँ ऐसे अपनों का क्या फायदा।

महर्षि दधीचि : एक ऐसे दानी थे जिन्होंने जनहित और परोपकार के लिए अपनी अस्थियाँ दान कर दी थी

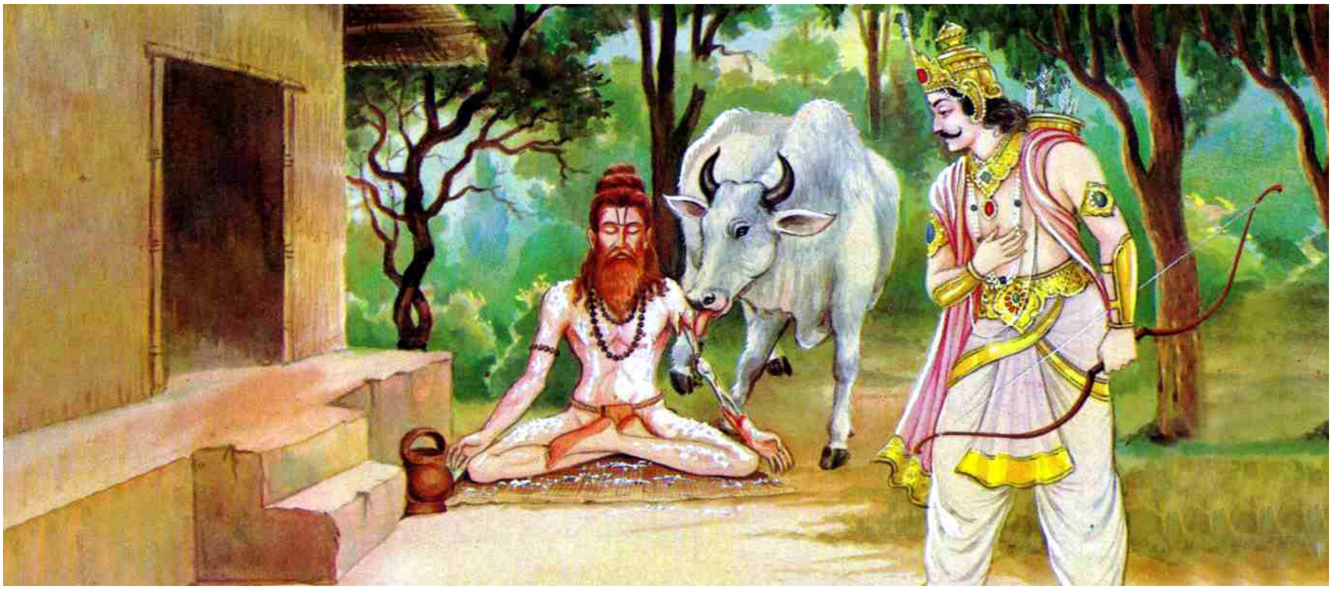

दधीचि प्राचीन काल के परम तपस्वी और ख्याति प्राप्त महर्षि थे। दधीचि ने अपना सम्पूर्ण जीवन भगवन शिव की भक्ति में व्यतीत किया। दधीचि वेद शास्त्रो के पूर्ण ज्ञाता थे। स्वाभाव से वे बेहद ही दयालु और दुसरो का हित करने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। उन्होंने लोकहित के लिए कठोर तपस्या की। महर्षि दधीचि के तप के तेज के कारण देवराज इंद्र के मन में अनावश्यक डर पैदा हो गया था क्योंकि तप के तेज़ की वज़ह से तीनों लोक आलोकित हो उठे थे। जिससे इंद्रदेव को महर्षि दधीचि से ईर्ष्या का भाव उत्पन्न होने लगा। इंद्र को लगा की महर्षि उससे इंद्रासन छीनना चाहते है तो इंद्रा देव कैसे भी करके महर्षि की तपस्या भंग करना चाहते थे, मगर विफल रहे। तब इंद्र उनकी हत्या के इरादे से, सेना सहित उनके पास पहुँचे मगर वे शांत भाव से समाधिस्थ बैठे रहे।

अपने असफ़ल प्रयासों से हारकर इंद्रा स्वर्ग लौट गए। कुछ समय बाद वृत्रासुर नामक राक्षस ने देवलोक पर कब्ज़ा कर लिया और इंद्रदेव के साथ सभी देवताओं को देवलोक से बहार निकाल दिया। इस समस्या के समाधान के लिए सभी देवता ब्रह्मा जी के पास गए, तब ब्रम्हा जी ने उन्हें एक उपाय बताया कि पृथ्वी लोक में दधीचि नाम के एक महर्षि रहते हैं यदि वे अपनी अस्थियों का दान कर दें तो उन अस्थियों से एक वज्र बनाकर वृत्रासुर राक्षस को मारा जा सकता हैं। इसलिए उनके पास जाकर उनकी अस्थियां मांगो। परन्तु इंद्र देव सोचने लगे की मैंने जिनकी हत्या का प्रयास किया भला वह मेरी सहायता क्यों करेंगे। लेकिन इसके अलावा और कोई उपाय नहीं था। इसलिए इंद्र देव, महर्षि के पास गए और झिझकते हुए बोले – महात्मन, तीनों लोकों के मंगल हेतु हमे आपकी अस्थियां चाहिए। इस पर महर्षि बड़ी ही विनम्रता के साथ बोले – हे इंद्र देव, यदि मेरी अस्थियों से मानव और देव जाती का कुछ हित होता है तो में सहर्ष अपनी अस्थियों का दान देने के लिए तैयार हूँ। इंद्र उनकी यह निस्वार्थ भावना देखकर हैरत में पड़ गए।

''दृष्टि को संजोना, जीवन को संजोना है - तारा नेत्रालय''

तारा संस्थान द्वारा संचालित नेत्र चिकित्सालय ''तारा नेत्रालय'' इकाईयों में प्रदत निरूशुल्क सेवाएँ :

- रोगियों की निःशुल्क जाँच तथा आधुनिक तक़नीक (फेको) द्वारा मोतियाबिंद के ऑपरेशन।
- लेज़र से झिल्ली का ऑपरेशन।
- उदयपुर के आसपास के आदिवासी छेत्रों में, दिल्ली, मुंबई, फ़रीदाबाद व लोनी (गाज़ियाबाद) के ग्रामीण तथा स्लम छेत्रों में नेत्र शिविरों का आयोजन जिसमे निरूशुल्क नज़र के चश्मों व दवाईयों का वितरण तथा मोतियाबिंद के ऑपरेशन हेतु चयन।
- बेसहारा अकेले वृद्धजनों के लिए, घर जैसी सुविधायुक्त ''आनंद'' वृद्धाश्रम।
- गौरी योजना के तहत लगभग 800 विधवा महिलाओं को प्रतिमाह 1000 रु. पेंशन।
- तृप्ति योजना के अंतर्गत करीब 2500 गरीब ग्रामीण बुजुर्गो को घर पर मासिक राशन व 300 रु. नगद राशि ।
- श्री शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल, उदयपुर (कुल विद्यार्थियों की संख्या–160)।
- जिला अंधता निवारण सम्मिति, एस.बी.आई फाउण्डेशन तथा चेतना इंडिया (अहमदाबाद) के सौजन्य से तारा संस्थान द्वारा माह नवंबर से दिसम्बर 2024 में आयोजित शिविरों का संक्षिप्त विवरण।

मस्ती की पाठशाला

तारा संस्थान उदयपुर द्वारा जुलाई 2016 में शुरू की गयी सांयकालीन मस्ती की पाठशाला का उद्देश्य, उदयपुर की कच्ची बस्तीयो में रह रहे मज़दूरों के बच्चो के लिए एक बेहतर तथा उज्जवल भविष्य प्रदान करना है। इस पाठशाला के द्वारा इन बच्चो के लिए प्राथमिक शिक्षा के साथ–साथ स्वच्छता की भावना को भी बढ़ावा देना है। इन बच्चो को यहाँ पर शिक्षा के साथ सांस्कृतिक एवं नैतिकता का पाठ भी पढ़ाया जाता है। कई प्रकार की गतिविधियाँ जैसे की नृत्य, खेल–कूद आदि के साथ इन्हे यहाँ नाश्ता भी दिया जाता है, ताकि इन बच्चो को यहाँ नियमित रूप से आने के लिए प्रेरित किया जा सके। इसके साथ तारा संस्थान के दानदाताओं द्वारा दिए गए दान से समय समय पर भोजन भी कराया जाता है। इस मस्ती की पाठशाला के माध्यम से तारा संस्थान बच्चो को समाज में सलीके से जीने की राह दिखा रही है जीवन में शिक्षा, स्वच्छता और आत्मसम्मान से जीने का क्या महत्व है। हर बार की तरह यहाँ पढ़ रहे बच्चो में से किसी एक की कहानी बताते हुए आज हम आपको मिलवा रहे है।सवीना कच्ची बस्ती की रहने वाली नौ वर्षीय साक्षी ओढ़ की साक्षी के माता पिता दोनों ही बेलदारी का काम करते है बचपन से ही पढ़ने की इच्छा रखने वाली साक्षी को जब माँ बाप की कमजोर आर्थिक स्तिथि के कारण पढ़ने को नहीं मिल पा रहा था तो वह रोज़ रोकर उनसे स्कूल भेजने के लिए ज़िद करती, पर माँ बाप मजबूर थे । एक दिन काम से लौटते वक्त साक्षी की माँ को घर के नज़दीक ही चल रहे मस्ती की पाठशाला के बारे में बताया तो उसी शाम वे साक्षी को दाखिले के लिए यहाँ ले आई। पिछले पांच वर्षो से साक्षी यहाँ पढ़ रही है और बहुत खुश भी है की उसकी एक ही इच्छा थी ष्पढ़नाष जो अब मस्ती की पाठशाला के द्वारा पूरी हो रही है। आप सब भी हमारे अन्य दानदाताओं की तरह इन गरीब बच्चो के भविष्य को उज्जवल बनाने में तारा संस्थान का सहयोग कर सकते है। सहयोग करने के लिए संपर्क करे : 9549399993

मजदूरों के 1 बच्चे की शिक्षा सौजन्य सहयोग रु. 6000/– प्रति वर्ष

''निःशुल्क मोतियाबिन्द के ऑपरेशनों द्वारा लौटी आँखों की रोशनी''

नाथी बाई : लगभग 70 वर्षीय श्रीमती नाथी बाई एक घरेलु महिला है। पिछले दो महीनो से ना दिखाई देने की समस्या से झूझ रही है। कई बार सोचा की आँखों का इलाज करवा लिया जाये मगर समय निकलता गया और यह अपनी आँखों की रोशनी खोती चली गई। अब जब दिखना बिलकुल बंध हो गया है तो इलाज करवाना आवश्यक हो गया है, तब इनके बड़े बेटे जो की सुखेर उदयपुर में चाय का ठेला लगाते है, ने उन्हें अपने साथ तारा नेत्रालय में चलकर जाँच करवाने का आग्रह किया तारा नेत्रालय में जाँच के पश्चात् ऑपरेशन हेतु भर्ती कर लिया गया एवं अगले दिन ऑपरेशन भी कर दिया गया। तारा नेत्रालय को धन्यवाद देते हुए नाथी बाई कहती है, की वह बहुत खुश है की बिना किसी खर्च के सारा इलाज मुफ्त में हो गया और उनकी आँखों की रोशनी उन्हें वापिस मिल गई।

रेखा जी मेहतारू 65 वर्षीय मुंबई निवासी श्रीमती रेखा जी पिछले कई समय से ठीक से देखने में असमर्थ है। घर गृहस्थी के कामो की वजह से खुद के लिए समय निकाल पाना उनके लिए काफी मुश्किल होता था। लेकिन अब एक उम्र गुज़र जाने के बाद उनकी आँखों की रोशनी की परेशानी बड़ गयी, तो लगा की अब इलाज करवाना जरुरी हो गया है। तभी उन्ही के मोहल्ले की एक महिला ने तारा नेत्रालय में हो रहे निःशुल्क मोतियाबिन के ऑपरेशनो के बारे में उन्हें बताया, तब रेखा जी ने तारा नेत्रालय में ही अपना इलाज करवाने का फैसला किया।

हीरा जी : 75 वर्षीय श्री हीरा जी की दाई आँख में मोतियाबिन साफ़ दिखाई दे रहा था। काफी समय से इन्हे ये समस्या थी, जिसके चलते पिछले दो महीनो से तो दिखना भी बंध हो गया था। फिर किसी परिचित से इन्हे तारा नेत्रालय, उदयपुर के बारे में पता चला की यहाँ निःशुल्क मोतियाबिन के ऑपरेशन किये जाते है। तब इन्होने यहाँ आकर ऑपरेशन करवाने का फैसला किया।

नेत्र चिकित्सा सेवा (मोतियाबिन्द ऑपरेशन) : 17 ऑपरेशन 59500 रु., 09 ऑपरेशन 31500 रु., 06 ऑपरेशन 21000 रु., 03 ऑपरेशन 10500 रु., 01 ऑपरेशन 3500 रु.

मिल-जुल कर किया गया हर काम, बेहतर परिणाम ही देता है।

अकेलापन सबसे दर्द भरी भावना है

अनीता गुर्जर : वो कहते है ना कोई पराया कितना ही बड़ा दर्द क्यों ना दे अगर अपने साथ हो तो सेहन हो जाता है, मगर जब अपने ही दर्द देने लग जाये तो उसकी दवा कहाँ से लाये कुछ ऐसी ही कहानी है उदयपुर निवासी अनीता गुजर की जिनको उन्ही के पति ने जलाकर मारने की कोशिश की। इस हादसे में वे बच तो गई पर शरीर आधे से ज्यादा जल गया। ऐसे हालात में दो बच्चो के साथ अनीता जी के पति ने इन्हें घर से निकल दिया और कोई आर्थिक मदद भी नहीं की। अब अनीता जी अपनी माँ, भाई और भाभी के यहाँ रहती है, पर इनके घरवालो की आर्थिक स्थिति भी इतनी अच्छी नहीं है। एक दिन पड़ोस में रह रही एक महिला ने अनीता जी को तारा संस्थान द्वारा चलाई जा रही गौरी योजना के बारे में बताया, तब वह संस्थान में आई और गौरी योजना की लाभार्थी कैसे बन सकती है इसकी जानकारी लेकर अपना नाम योजना से जुड़ने के लिए लिखवाकर गई। जिससे की अब उन्हें संस्थान द्वारा प्रति माह 2000 रु. की आर्थिक मदद तथा तृप्ति योजना के तहत प्रतिमाह आवश्यक राशन भी दिया जाता है।

पिंकी यादव : इंसान का जब बुरा वक्त आता है। तब चारों ओर से तक़लीफे उसे घेर लेती है, इसकी की जीती जागती मिसाल है, तारा संस्थान द्वारा चलाई जा रही गौरी योजना की लाभार्थी पिंकी यादव जी जो की बत्तीस वर्ष की उम्र में ही पति को खो चुकी है। घर में एक बूढ़ी सास और दस वर्षीय बेटा है। घर की आर्थिक स्तिथि बहुत ही ख़राब है क्योकि कोई है ही नहीं कमाने वाला और यह भी दिव्यांग होने के कारण कुछ कामने में भी असमर्थ है, जिसकी वजह से कई बार खाने को भी नहीं होता। जहाँ इस उम्र में इनकी सासु माँ को देखभाल और सेवा करवाने की जरुरत है वही वे पिंकी जी की सेवा करती है। संस्थान द्वारा चलाई जा रही गौरी योजना के बारे में पता चलते ही यह जैसे तैसे करके संस्थान में आई और लाभार्थियों में अपना नाम दर्ज करवाया, जिससे की इन्हें संस्थान की ओर से 1000 रु. प्रति माह की सहायता मिल रही है।

विधवा मासिक पेंशन (गौरी) योजना सहायता : प्रति विधवा 01 वर्ष – 12000 रु., 06 माह – 6000 रु., 01 माह – 1000 रु.

लाभार्थी अंतर्गत अन्नदान (तृप्ति योजना) – काली बाई

जिस तरह से मौसम बदलता है उसी तरह इंसान के दिन भी बदल जाते है। यहाँ हम बात कर रहे है जावरमाइंस, परमपुरा कॉलोनी निवासी काली बाई जी की जो अपने पति की मृत्यु के बाद तीन बच्चो के साथ कच्चे से मकान में रहती है। काली बाई ने लोगो के घर झाड़ू–पोछा करके जैसे तैसे अपने बच्चो का लालन पालन किया है। मगर अब उन्हें बाहर काम करने में तकलीफ होती है, क्योकि उन्होंने अभी आँखों का ऑपरेशन करवाया है। बेटा है, मगर वह भी इतना नहीं कमा पता है जिससे की घर के हालातों में कुछ सुधार हो सके। स्तिथि इतनी ख़राब है कि घर में लाइट कनेक्शन तक नहीं ले रखा है। वैसे तो जीने की यात्रा काली बाई के लिए कठिन थी, लेकिन उन्होंने जीवन की हर चुनौती का सामना किया। इस बुढ़ापे में, एक दिन उन्हें सहारा मिला। तारा संस्थान द्वारा चलाये जाने वाले "अन्नदान योजना" के अंतर्गत उनके गांव में खा। सामग्री घर तक पहुचाई जाती है।यह योजना काली बाई के लिए एक बहुत बड़ी सहायता साबित हुई, क्योकि अब कम से कम उनके भोजन की वव्यवस्था हो जाती है। यह उनके बुढ़ापे में एक बड़ा संतोष का कारण बन गया। काली बाई तारा संस्थान और दानदाताओं की अत्यंत आभारी है।

अन्नदान योजना (तृप्ति) प्रति बुजुर्ग खा। सामग्री सहायता : 01 वर्ष – 18000 रु., 06 माह – 9000 रु., 01 माह – 1500 रु.

News in Brief : 1

10-11-2024 **प्रेरकों का सम्मेलन, उदयपुर**

तारा संस्था द्वारा प्रेरकों का सम्मलेन उदयपुर में आयोजित किया गया जिसमे तारा संसथान के 35 प्रेरकों ने हिस्सा लिया।

10-11-2024 **स्नेह मिलन समारोह, जयपुर**

तारा संस्थान, उदयपुर द्वारा जयपुर के फोर्ट चन्द्रगुप्त होटल में स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया।

15-11-2024 **आओ हम पिकनिक चले!**

तारा संस्थान द्वारा शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल के बच्चों को महाराणा प्रताप गौरव केंद्र ले जाया गया।

17-11-2024 **स्नेह मिलन समारोह, रतलाम**

होटल स्वीट ऐवेन्यू, डॉ. खंडेलवाल क्लिनिक के पास, अजंता टॉकीज़ रोड, रतलाम (म.प्र.) में तारा संसथान द्वारा स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया जिसमे 38 अतिथि शामिल हुए।

01-12-2024 **स्नेह मिलन समारोह, गुरुग्राम**

तारा संस्थान ने वैश्य समाज धर्मशाला सेक्टर 4, गुड़गाँव में स्नेह मिलन का आयोजन किया जिसमें 75 अतिथि पधारे।

07-12-2024 **स्नेह मिलन समारोह, लुधियाना**

तारा संस्थान, उदयपुर द्वारा लुधियाना के जेड़ ग्रेड होटल में स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया।

चीजें तब तक ही मुश्किल होती है, जब तक हमारा ध्यान लक्ष्य पर नहीं होता।

12-12-2024 — **वरिष्ठ जन सम्मान समारोह, सिंगौली (म.प्र.)**

बघेरवाल समाजिक पारमार्थिक सोसाइटी मेवाड़ प्रांत के अध्यक्ष तथा तारा संस्थान उदयपुर द्वारा वरिष्ठ जन सम्मान समारोह का आयोजन सिंगौली में आयोजित किया गया।

14-12-2024 — **वरिष्ठ जन सम्मान समारोह, निम्बाहेड़ा**

महावीर इंटरनेशनल ''पद्मिनी'' तथा तारा संस्थान–उदयपुर द्वारा, निम्बाहेड़ा में वरिष्ठ जन सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

16-12-2024 — **वरिष्ठ जन सम्मान समारोह, किशनगढ़**

महावीर इंटरनेशनल सखी सुमंगला तथा तारा संस्थान द्वारा वरिष्ठ जन सम्मान समारोह का आयोजन किशनगढ़ में किया गया।

21-12-2024 — **वरिष्ठ जन सम्मान समारोह, आबू रोड**

राजस्थान पेंशनर समाज उपशाखा और तारा संस्थान द्वारा वरिष्ठ जन सम्मान समारोह का आयोजन पेंशनर्स भवन आबू रोड में हुआ।

22-12-2024 — **वरिष्ठ जन सम्मान समारोह, फरीदाबाद**

महाराजा अग्रसेन मंदिर और वैश्य अग्रवाल मित्र मंडल फरीदाबाद एवं तारा संस्थान उदयपुर के संयुक्त तत्वाधान में वरिष्ठजन सम्मान समारोह का आयोजन महाराजा अग्रसेन मंदिर सेक्टर 21 डी, फरीदाबाद में किया गया।

22-12-2024 — **वार्षिक उत्सव**

शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल के उत्सव में बच्चो ने खूब बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

25-12-2024 **क्रिसमस**

तारा संस्थान द्वारा संचालित सांयकालीन मस्ती की पाठशाला में बच्चो ने खूब उत्साह के साथ क्रिसमस मनाया।

माँ की कहानियाँ हैं,
परियों का फ़साना हैं,
बारिश में कागज़ की नाव हैं,
बचपन का हर मौसम सुहाना हैं...!!

नेत्रालय मासिक अपडेट्स :

मोतियाबिन्द जाँच – ऑपरेशन हेतु चयन शिविर

तारा संस्थान निर्धन बन्धुओं की जाँच हेतु शिविर लगाने एवं चयनित मोतियाबिन्द ग्रस्त बन्धुओं के शिविर स्थल के निकटवर्ती कस्बे या शहर में स्थित अधुनातन सुविधाओं से सम्पन्न नेत्र चिकित्सालयों या संस्थान के उदयपुर, दिल्ली, मुम्बई, फरीदाबाद व लोनी (गाजियाबाद) स्थित 'तारा नेत्रालय' में सर्वथा निःशुल्क ऑपरेशन करवाने का कार्य प्रारंभ किया है। निःशुल्क सुविधाओं में मोतियाबिन्द की जाँच, दवाइयाँ, लेंस, ऑपरेशन, चश्मे, रोगियों का परिवहन, भोजन तथा देखभाल आदि सम्मिलित है।

दानदाताओं के सौजन्य से माह नवम्बर से दिसम्बर 2024 में आयोजित शिविरों का संक्षिप्त विवरण

अन्य दानदाताओं के सौजन्य से देशभर में आयोजित शिविर : भार्गव साहब – दिल्ली, चेतना इंडिया, अहमदाबाद, डीबीसीएस, ईसीजीसी, जैन धर्मार्थ अस्पताल – नासिक, श्री जितेंद्र नंदा, श्री कैलाश चन्द्र गोयल, कमल मॉडल पब्लिक स्कूल – दिल्ली, मालाश्री फाउंडेशन – दिल्ली, एनपीसीबी, पिनेकल कैपिटल सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड – गुड़गाँव, प्रधान हार्डवेयर – लोनी, श्रीमती सुषमा – सत्यभूषण जैन – दिल्ली, एसबीआई फाउंडेशन, श्री चिरंजी लाल जैन – पंजाब

पुण्यतिथि भोजन सेवा योजना : 8000 रुपये

तारा संस्थान, उदयपुर की यह विशेष पहल उन परिवारों के लिए समर्पित है जो अपने दिवंगत परिजनों की पुण्यतिथि पर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहते हैं। इस योजना के अंतर्गत, परिवारजन 8,000 रुपये का योगदान देकर संस्थान के वृद्धाश्रम में रह रहे बुजुर्गों के लिए भोजन सेवा का आयोजन कर सकते हैं। इस पावन अवसर पर दिवंगत आत्मा की तस्वीर प्रदर्शित कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए जाएंगे, जिससे उनकी यादें और आशीर्वाद इस कार्य के माध्यम से जीवित रहेंगी। यह एक अद्वितीय अवसर है अपने प्रियजन की स्मृति को सेवा और मानवता के रूप में सम्मानित करने का।

हार्दिक श्रद्धांजलि

तारा संस्थान के इन दानदाताओं का स्वर्गवास हो गया। तारा संस्थान की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि।
हम प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उनकी आत्मा को शांति व उनके परिवार को सम्बल प्रदान करें।

स्व. श्रीमती आशा जी जैन
जयपुर

स्व. श्री एस.पी. शर्मा
चण्डीगढ़

स्व. श्री एस.एन. जी गुप्ता
जयपुर

स्व. श्रीमती सुधा जी जैन
जबलपुर (म.प्र.)

स्व. श्री अर्जुन देव जी शर्मा
गुरदासपुर (पंजाब)

स्व. श्रीमती रुकमा देवी जी
जोधपुर

स्व. श्री पंडित टेकचन्द जी शर्मा एवं
स्व. श्रीमती भागीरथी देवी जी, दिल्ली

आदरणीय,

आपने वित्तीय वर्ष 2024–2025 में तारा संस्थान में दान देकर कई जरूरतमंद व्यक्तियों को राहत पहुँचाई। आपका अनेक धन्यवाद। अतः आपसे निवेदन है कि INCOME TAX के नियमानुसार यदि आप TAX में छूट चाहते हैं तो आपका PAN NO. संस्थान को देना जरूरी है। इसे हम अपने INCOME TAX RETURN के 10 BD में सूचित करेंगे तो ही आपको छूट मिलेगी। यदि आप छूट ना भी लेना चाहें तो आप निम्न में से कोई भी ID दे देवें।

● VOTER ID ● AADHAR CARD ● RASHAN CARD ● PASSPORT ●

यह भारत सरकार के नियमानुसार अनिवार्य है। कृपया आप इस व्हाट्सएप्प नम्बर **9549399993** पर सूचित करावें।

आदर सहित....!

कल्पना गोयल

'तारा परिवार का सौभाग्य है कि आपने अभिनन्दन का अवसर प्रदान किया'

श्री संजीव कुमार सिंघल, दिल्ली | श्री चन्द्रभान गुप्ता, जयपुर | श्री राधेश्याम कश्यप, हरिद्वार (उख.) | श्रीमती राज जैन, देहरादून (उख.) | श्री रविन्द्र मग्गो | श्री सुशील मग्गो | श्रीमती लता भाटिया, मुरादाबाद (उ.प्र.) | श्री अरविन्द जी, मुजफ्फर नगर (उ.प्र.)

श्री दिनेश कुमार जैन, जयपुर | श्री महेन्द्र अग्रवाल, हैदराबाद | श्री बृजमोहन शर्मा, कोटा (राज.) | श्रीमती लक्ष्मी सतिया, बुन्दी (राज.) | श्री अशोक कुमार जैन, मोरक (राज.) | श्री मुकेश टंडन, दिल्ली | श्री हरिमोहन रेला, जयपुर | श्री प्रदीप कुमार जी, दिल्ली

श्री अरिहंत जैन, बैंगलोर | श्री दिनेश गोयल, भोपाल (म.प्र.) | श्री महेन्द्र जी, कोटा | श्री रविन्द्र कुमार शर्मा, कांगरा (हि.प्र.) | श्री पी.डब्ल्यू. केलकर, भोपाल (म.प्र.) | डॉ. एस.के. शर्मा, जयपुर | श्री सी.आर. मीना, जयपुर | श्रीमती मीना भण्डारी, जोधपुर

श्री मनोज कुमार डोलिया, बैंगलोर | श्री अनिल पाटनी दीवान, जयपुर | आनन्द ज्वेलर्स, बैंगलोर | मनोज बजाज गोपाल प्लास्टिक, बैंगलोर | श्री कृष्णकुमार मेहता, जयपुर | डॉ. रामगोपाल गुप्ता, जयपुर | गणेश ज्वेलर्स, बैंगलोर | श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, मेरठ (उ.प्र.)

श्री मदन लाल राठी, सूरत (गुज.) | लायन अध्यक्ष श्री अजय मेहरोत्रा, प्रयारागज | श्री हरीचरण जैन, अहमदाबाद | श्री श्यामबिहारी भारद्वाज, रतलाम (म.प्र.) | श्री श्रीचन्द वर्धानि, नीमच (म.प्र.) | श्री रमेश कुमार जी, पटना | श्री मुन्ना भाई जी, पटना | श्री कन्हैया लाल जैन, अहमदाबाद

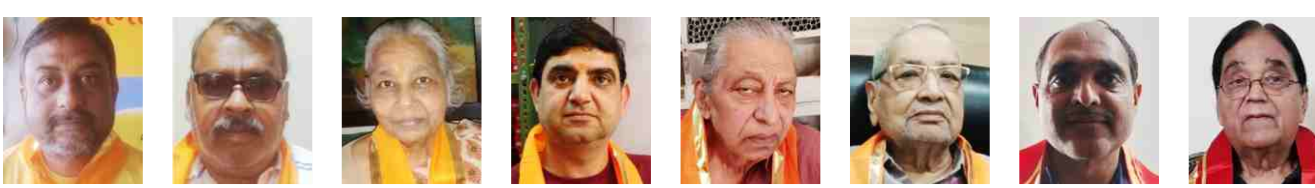

श्री ललित कसेरा, सैलाना, रतलाम | श्री राजमल कुमावत, मन्दसौर | श्रीमती पुष्पाबेन रूठना, अहमदाबाद | श्री तारा चन्द जी, जयपुर | श्री लक्ष्मण परनामी, जयपुर | श्री बाबूलाल जैन, बाराबंकी (उ.प्र.) | श्री दिनेश जैन, दिल्ली | श्री बालकृष्ण करकरा, नई दिल्ली

श्री अशोक कालेरा, लखनऊ (उ.प्र.) | श्री गोपालकृष्ण पुरोहित, जोधपुर | श्री यशपाल जैन, लुधियाना (पंजाब) | श्री रमनलाल गुप्ता, हैदराबाद | श्री शिव मोहन गुप्ता, पटियाला (पंजाब) | श्री राकेश कुमार खरे, लखनऊ | श्री महेश मालपानी, जयपुर | श्री अश्विन गोयल, संगरूर (पंजाब)

'तारा परिवार का सौभाग्य है कि आपने अभिनन्दन का अवसर प्रदान किया'

श्री गुरदीप गिरी बाबा पातड़ाँ, पटियाला (पंजाब)	श्री प्रेमचन्द गर्ग पातड़ाँ, पटियाला (पंजाब)	श्री शिवचरण गुप्ता जयपुर	श्री आनन्द कुमार जी लखनऊ	श्री सरोज कुमार जैसलमेरिया जोधपुर	श्री कैलाश मेहता जोधपुर	श्री मनोहर लाल जसवानी बिलासपुर (छ.ग.)	श्रीमती प्रेमलता मेहंदीरत्ता जबलपुर

श्री रविन्द्र कुमार अनेजा लुधियाना (पंजाब)	श्री श्यामसुन्दर नारंग होशियारपुर (पंजाब)	श्री बलदेव राज शर्मा चण्डीगढ़	श्री प्रदीप सोनी जयपुर	श्रीमती ईश्वर देवी पानीपत (पंजाब)	साहिरा गुप्ता लुधियाना (पंजाब)	श्रीमती प्रेम जी दिल्ली	श्री केदार नाथ जी दिल्ली

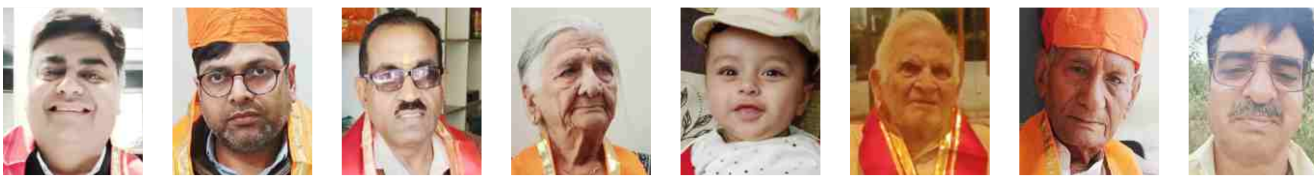

श्री आशीष तकियार दिल्ली	श्री राजेश गोयल जयपुर	श्री रविन्द्र कुमार शर्मा रामपुर	श्रीमती सरस्वती देवी रूड़की	नैतिक पुत्र श्री नितिन श्रीवास्तव, गाजियाबाद	श्री विनोद कुमार जैन देहरादून	श्री श्रीराम खण्डेलवाल जयपुर	श्री करण सिंह जी उदयपुर

श्री संजय जैन लुधियाना (पंजाब)	श्री सोमनाथ पुरी दिल्ली	श्री तीरथ दास रोचवानी अलवर	श्री सीताराम भास्कर दिल्ली	सीए श्री मुकेश गुप्ता अलवर	श्रीमती विमला कोठारी जोधपुर	श्री अशोक कुमार गुप्ता दिल्ली	श्री सुदर्शन देव वर्मा जयपुर

श्री हरक चन्द जैन जयपुर	श्री कैलाश चन्द्र जी बैंगलोर	श्री नानूराम गोयल दिल्ली	श्री सुर्यप्रकाश गोयल कोटा	श्रीमती राजरानी जैन दिल्ली	श्री रूपचन्द बंसल कोटा	श्री सुरेश अय्यर कोटा	श्री महेश चन्द्र गुप्ता दिल्ली

श्री रामप्रकाश जी मोगा (पंजाब)	श्री संतलाल सुनील कुमार मोगा (पंजाब)	श्री उमेश जैन लुधियाना (पंजाब)	श्री संजय जैन बूंदी (राज.)	श्री उम्मेदसिंह जी कोटा	श्री पन्नालाल कोटडिया दुर्ग (छ.ग.)	श्री विनय भारती जैन नई दिल्ली	श्रीमती संचिता जी दिल्ली

श्री एस.एन. गोयल दिल्ली	श्रीमती कुमुद शर्मा दिल्ली	श्री लीडर इलेक्ट्रिक कंपनी राजकोट	श्री कौशिक भाई जी राजकोट	श्री राजेश भाई जी राजकोट	श्री सुरेश कुमार गुप्ता दिल्ली	श्री राजीव रंजन उपाध्याय प्रयागराज	श्री उत्तम कुमार जी बैंगलोर

‘तारा परिवार का सौभाग्य है कि आपने अभिनन्दन का अवसर प्रदान किया’

श्री गुलशन कुमार वाधवा, जयपुर
श्री के.पी. जैन, फरीदाबाद
श्री रामदेव तायल, भिवानी
श्री हनुमान प्रसाद जी, भिवानी
श्री लक्ष्मी देवी जैन, भिवानी
श्री प्रेमप्रकाश गुप्ता, मेरठ
श्रीमती प्रेमलता जी, मेरठ
श्री वीरेन्द्र कुमार महाजन, जयपुर

श्री एन.एल. नारंग, जयपुर
श्री आर.के. लोहड़िया, जयपुर
श्री रामबाबू अग्रवाल, जयपुर
श्री अमित जैन, जयपुर
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, मेरठ
श्री करतार सिंह यादव, मेरठ
श्री सतीश काबरा, बैंगलोर
श्री अनिल कालरा

ऋषभ ज्वेलर्स, बैंगलोर
श्री अशोक अग्रवाल, अलवर (राज.)
श्री गजेन्द्र कुमार बंसल, अलवर (राज.)
श्री जगदीश प्रसाद जी, दिल्ली
श्री सतपाल मनोचा, लुधियाना (पंजाब)
शिवार्चित खेमका, औरंगाबाद (बिहार)
श्री अशोक कुमार जैन, औरंगाबाद (बिहार)
श्री रविशंकर जी, नाभा, पटियाला (पंजाब)

श्री कश्मिरी लाल शर्मा, अमृतसर (पंजाब)
श्री राघव खन्ना, अमृतसर (पंजाब)
श्रीमती वैद्यप्रकाश शर्मा, होशियारपुर (पंजाब)
श्री भंवर लाल भाणावत, उदयपुर
श्री वैदसागर गुप्ता, दिल्ली
श्री शम्भू दयाल जी, रामगंज मण्डी (राज.)
श्री देवेन्द्र सक्सेना, जयपुर
श्रीमती मीरा मलिक, दिल्ली

श्री धर्मपाल गोयल, फरीदाबाद
श्री कैलाश चन्द्र भूतड़ा, जोधपुर
श्री बनवारी सोनी, जयपुर (राज.)
श्री अशोक कुमार गुलाटी, पंचकुला (हरि.)
श्री नरेश सुल्तानिया, बिलासपुर (छ.ग.)
श्रीमती संतोष कुमारी डंग, कोटा
श्री धनराज चौहान, दिल्ली
श्री मोहन लाल राठौड़, मुम्बई

श्रीमती शांति ताराचन्द जी, मुम्बई
श्रीमती शांति देवी श्रीवास्तव, मुम्बई
श्री सुरेश भूपाल जी, मुम्बई
श्री सुभाष चन्द्र बत्रा, दिल्ली
श्री दिनेश गोयल, भोपाल
श्री बसंत कुमार (जगदंबा मार्बल), बांसवाड़ा (राज.)
श्री बजरंग लाल मिहारिया, कानपुर
श्री राम मदन जी, दिल्ली

श्री जय नारायण शर्मा, फरीदाबाद
श्री अनिल जैन, अहमदाबाद
श्री नारायण लाल सोलंकी, रतलाम
श्री शिव बजाज, दिल्ली
श्री जे.एल. चावला, दिल्ली
श्री कमल कुमार जैन, प्रताप नगर, दिल्ली
श्री प्रमोद कुमार वर्मा, जोधपुर
श्रीमती राज दुलारी, दिलली

AREA SPECIFIC TARA SADHAKS CONTACT NUMBER LIST

Area Delhi Cell : 7821855747	**Area Delhi** Cell : 7821055717	**Area Delhi** Cell : 7821855741
Area Mumbai Cell : 7821855738	**Area Mumbai** Cell : 7821855751	**Area Jaipur (Raj.)** Cell : 9983560006
Area Lucknow (UP) Cell : 9358300777	**Area Punjab** Cell : 7821055718	**Area Jodhpur, Kanpur** Cell : 9001324709
Area Surat (Guj.) Cell : 7821855726	**Area Hyderabad** Cell : 7821855746	**Area Noida, Ghaziabad** Cell : 7821855750
Area Chandigarh (HR) Cell : 7821855756	**Area Nagpur, Pune** Cell : 7821855736	**Area Karnatak** Cell : 7230066286
Area Gurgaon, Faridabad Cell : 7821855758	**Area Raipur, Durg, Bilaspur (C.G.), Patna (Bihar)** Cell : 8696696345	
Area Uttarakhand Cell : 7229852227	**Area Ahmedabad (Guj.), Ratlam, Mandsaur, Neemuch (MP)** Cell : 7821855745	

TARA SANSTHAN BANK ACCOUNTS

ICICI Bank (Madhuban) . . A/c No. 004501021965 . . . . IFSC Code : ICIC0000045
State Bank of India . . . . A/c No. 31840870750 . . . . IFSC Code : SBIN0011406
IDBI Bank . . . . A/c No. 1166104000009645 . IFSC Code : IBKL0001166
Axis Bank . . . . A/c No. 912010025408491 . . . IFSC Code : UTIB0000097
HDFC Bank . . . . A/c No. 12731450000426 . . . . IFSC Code : HDFC0001273
Canara Bank . . . . A/c No. 0169101056462 . . . . . IFSC Code : CNRB0000169
Central Bank of India . A/c No. 3309973967 . . . . IFSC Code : CBIN0283505
Punjab National Bank . A/c No. 8743000100004834 . IFSC Code : PUNB0874300
Bank of Baroda . . . . A/c No. 30250100014174 . . . . IFSC Code : BARB0HIRANM

DONORS KINDLY NOTE

It you do not get any response from any of the above mentioned Mob. numbers, Kindly inform us at Mobile No. **09549399993 and / or 09649399993**

INCOME TAX EXEMPTION ON DONATIONS

Donations to Tara Sansthan are TAX-EXEMPT under section 80G of I.T. Act. 1961 at the rate of 50%

Donation to **"TARA SANSTHAN"** may be sent by cheque/draft drawn in favor of Tara Sansthan, payable at Udaipur, OR may be remitted direct into any of the following Bank Accounts, with caopy of pay-in-slip and Donor's address to Tara Sansthan, Udaipur for expediting Donation Acknowledgment Receipt

FCRA

Tara Sansthan is registered under Foreign Contribution Regulation Act (FCRA) with the Govt of India for receiving Donations from Foreign Countries VIDE Registration No. 125690108

HUMANITARIAN ENDEAVORS OF TARA SANSTHAN

Shri Sachin Bhatia Eye Hospital - Udaipur (Under Tara Sansthan)
236, Hiran Magari, Sector 6, Udaipur (Raj.)-313002, Mob. No. 7821855749

Tara Netralaya - Delhi
371, Main Najafgarh Road, Opposite Metro Pillar No. 724, Nawada, Uttam Nagar, New Delhi-110059
Mob. No. 9560626661

Tara Netralaya - Mumbai
2nd Floor, Sneh Crown, Near Apna Ghar Phase - 3, Kala Silk, Silvar Sarita, Meera Village, Kashimira, Thane-401107 (Maharashtra)
Mob. No. 7821855748, 9529285557

Tara Netralaya - Faridabad
3 E / 12 & 13, Bungalow Plot, Pulia No. 3, Masjid Road, Near Church, Main Road, N.I.T. 3, Faridabad (HR)
Mob. No. 7821855758

Tara Netralaya - Loni
Pt. Munshilal-Draupadi Devi Free Eye Hospital Plot No: 78-79, Shiv Vihar Coloney, Near Mokshdham Mandir, Chirodi Road, Banthla Loni, Gaziabad-201102 (U. P.)
Mob. No. 7821855757

Smt. Krishna Sharma Anand Vruddhashram - Udaipur
#344/345, Hiran Magri, (In the lane of Rajasthan Hospital, Opposite Kanda House) Sector – 14, J-Block, Udaipur-313001 (Raj.)
Mob. 7821055720

Maa Draupadi Devi Anand Vruddhashram - Udaipur
#351/352, Hiran Magri, (In the lane of Rajasthan Hospital, Opposite Kanda House) Sector – 14, J-Block, Udaipur-313001 (Raj.)
Mob. 9773385330

Tara Sansthan Rajkiya Vruddhashram
100ft. Road, Om Banna Road, Opp. Hyundai Show Room, South Extension, Balicha, Udaipur (Raj.)-313001
Mob. 7229852229

Ravindra Nath Gaur Anand Vruddhashram - Prayagraj
25/39, L.I.C. Colony, Tagor Town, Prayagraj - 211002 (U.P.), Mob. 7821855755

Shikhar Bhargava Public School
H.O. Bypass Road, Gokul Village, Sector - 9, Udaipur - 313002 (Raj.)
Mob. No. 9636016973

Mumukshu Bhawan - Varanasi
Ganga Ghat Gate No. 1, Near Neelkanth Temple, Kashi Vishvanath Corridor, Varanasi (U.P.)
Mob. No. 7230073331

Maa Godavari Anand Vruddhashram
Krishna Kunj, Nandanvan, Village - Gomachi, Raipur (C.G) 492099, Mob. No. 9001324850

तारांशु (हिन्दी - अंग्रेजी) मासिक, नवम्बर - दिसम्बर 2024
प्रेषण तिथि : 11-17 प्रति माह
प्रेषण कार्यालय का पता : मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर
समाचार पत्र पंजीयन सं. : RAJBIL/2011/42978
डाक पंजीयन क्र. : आर.जे./यू.डी./29-102/2021-2023
मुद्रण तिथि : 9 प्रतिमाह

तारा संस्थान के नि:शुल्क मानवीय सेवा प्रकल्प, आपसे प्रार्थित अपेक्षित सहयोग - सौजन्य राशि

सहयोग राशि

आजीवन विशिष्ठ संरक्षक 51000 रु., अर्जित ब्याज से दानदाता के नाम से इच्छित दिनांक को प्रतिवर्ष 3 मोतियाबिन्द ऑपरेशन

आजीवन संरक्षक 21000 रु., अर्जित ब्याज से दानदाता के नाम से इच्छित दिनांक को प्रतिवर्ष 1 मोतियाबिन्द ऑपरेशन

आजीवन सदस्य 11000 रु.

नेत्र चिकित्सा सेवा (मोतियाबिन्द ऑपरेशन)

17 ऑपरेशन - 59500 रु., 09 ऑपरेशन - 31500 रु., 06 ऑपरेशन - 21000 रु., 03 ऑपरेशन - 10500 रु., 01 ऑपरेशन - 3500 रु.

अन्नदान योजना (तृप्ति) प्रति बुजुर्ग खा। सामग्री

01 वर्ष - 18000 रु., 06 माह - 9000 रु., 01 माह - 1500 रु.

विधवा मासिक पेंशन (गौरी) प्रति विधवा

01 वर्ष - 12000 रु., 06 माह - 6000 रु., 01 माह - 1000 रु.

आनन्द वृद्धाश्रम सेवा (प्रतिबुजुर्ग)

01 वर्ष - 60000 रु., 06 माह - 30000 रु., 01 माह - 5000 रु.

वृद्धाश्रम बुजुर्गों हेतु भोजन

4000 रु. (एक समय / प्रतियूनिट)

पुण्यतिथि भोजन सेवा योजना

8000 रु.

मस्ती की पाठशाला

वार्षिक शिक्षा 6000 रु. एवं भोजन 3000 रु. (60 बच्चे / 1 समय)

काशी विश्वनाथ में 50 निर्धनों को भोजन दान 2100 रु.

निवेदन : कृपया अपना दान - सहयोग नकद या 'तारा संस्थान, उदयपुर' के पक्ष में देय चैक/ड्राफ्ट द्वारा संस्थान के पते पर प्रेषित करने का कष्ट करें, अथवा : अपना दान सहयोग तारा संस्थान के निम्नांकित किसी बैंक खाते में जमा करवा कर 'पे-इन-स्लिप' अपने पते सहित संस्थान को प्रेषित करें ताकि दान - सहयोग प्राप्ति रसीद आपको तत्काल भेजी जा सके।

ICICI BANK (MADHUBAN)
A/c No. 004501021965 IFSC Code : ICIC0000045

STATE BANK OF INDIA
A/c No. 31840870750 IFSC Code : SBIN0011406

AXIS BANK
A/c No. 912010025408491 IFSC Code : UTIB0000097

HDFC
A/c No. 12731450000426 IFSC Code : HDFC0001273

PUNJAB NATIONAL BANK
A/c No. 8743000100004834 IFSC Code : PUNB0874300

BANK OF BARODA
A/c No. 30250100014174 IFSC Code : BARB0HIRANM

PAN CARD NO. TARA - AABTT8858J

मोबाइल से स्केन कर हाथों हाथ सहयोग भेजें।

Paytm	Google Pay	PhonePe
9549399993	7821855724	7821855724

FOLLOW US

www.instagram.com/tarasansthan
www.facebook.com/TaraSansthan
www.youtube.com/@TaraSansthanNGO
www.x.com/sansthantara
www.linkedin.com/company/tara-sansthan

बुक पोस्ट

TARA SANSTHAN
तारा संस्थान
डीडवाणिया (रतनलाल) नि:शक्तजन सेवा सदन,
236, सेक्टर - 6, हिरण मगरी, उदयपुर (राज.) 313002
मो. नं. : +91 95493 99993, +91 96493 99993
Email : info@tarasansthan.org, donation@tarasansthan.org, Website : www.tarasansthan.org